
गीतः । शिव स्वागत आज तुम्हारा ॥०॥ ओमशान्ति । बच्चों ने यह गीत सुना। अभी जिसको स्वागत करते हैं उनके जाना जाता है, देखा नहीं जा सकता। जो स्वागत करते हैं उनको भी जाना जाता है, देखा नहीं जा सकता। तुम जिसका स्वगतकरण करते हैं वह तौ है छोटी बिंदी, उनको जाना जाता है। और आत्मा को भी जाना जाता है। इन अंखों से देख नहीं सकते। जिसको जानते ही नहीं उनका अगर साठ ही भी समझ न सके। क्वाँकि यह है गुप्त। मनुष्य तो समझते हैं उनका नाम-लाल ही नहीं है। परन्तु बच्चे जानते हो मिहम पढ़ रहे हैं। यह तो जानते हो आत्मा ही पढ़ती है। आत्माओं को परमात्मा पढ़ते हैं यह कोई भी गीता आदि शास्त्रों में नहीं है। नई बात होने कारण मनुष्यों को बिश्वास नहीं आता तो फिर ज्ञान यज्ञ में विघ्न डालते हैं। तुम कहेंगे गीता भगवान ने सुनाई ब्रह्मा तन से। वह कहेंगे कृष्ण ने सुनाई। अभी कृष्ण तो ऐसे कहते नहीं हैं मेरे तन में शिव बाबा कह रहे हैं। यह कहते हैं रुदानी बाप इस तन से बच्चों को समझ रहे हैं। राजथोग सिद्धा रहे हैं। यह भी कोई नई बात नहीं। कल्प २ से ही होता है ईसलिए किञ्च पढ़ते हैं। समझते नहीं हैं मुझं पढ़ते हैं यह ज्ञान फिर कहां से लाया है। कोई शास्त्रों में तो है नहीं। कब भी पता नहीं पड़ता। तुम ही आदि सनातन देवी, देवता धर्म के पक्के। तुम्हारी बुधि में है ऊँच तै ऊँच भगवान है। फिर उन से दर्शा मिलता है नई दुनिया में। नई दुनिया में इन ल०ना० का राज्य था। यह है रमआबजेट। यह (ल०ना०) भारतवासी हैं ना। तुम बच्चे आकर राज्य करेंगे फिर यह ज्ञान जहाँ-पूर्नियाँ आद होंगी नहीं। जब यह राज्य करते थे तो ब्रैतन्य में थे। अभी उनकी जड़ चित्रों की पूजा करते हैं। यहराज्य बसते थे फिर कहां गये यह किसको भी पता नहीं है। प्रश्न भी नहीं उठा सकते हैं। वहां को गये नहीं हैं। वही आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती आती है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराते फिर ५००० वर्ष बाद रिपींट होंगी। फिर सत्युग आद में यह (ल०ना०) होंगे। यह पुरुषोत्तम संगम युग पर राज्य राज सीर्हेंगे। यह तुम्हारी अभी पता पड़ा है। पुरुषोत्तम संगम युगपर यहराज्य सीखे। अर्थातिराधे-कृष्ण की आत्मा ने सब्बैराजयोग सीखा। राधे कृष्ण हो नहीं। शरीर तो दोनों ही था। गोता नहीं था। नहीं तो श्याम-सुन्दर नाम ही वयों पड़े। श्रीकृष्ण तो गोता होना चाहिए ना। फिर सांकेतिक वयों रहा है। भवित-मार्ग में कथाएं तो बहुत बैठ सुनाते हैं। बाप अच्छा आकर हपश्चाते हैं ज्ञान और भक्ति हैं। ज्ञान में ही आकर देता हूँ जिससे तुम राजयोग सीख विव के प्रातिक बन जाते हो। यह चित्र आद सभी है भक्ति-मार्ग के। भारत में तो दैर के दैर के चि, मींदर आद हैं। जितने भारत में हैं उतने और कहां नहीं हैं। तुम जानते हो भारत ही अविनाशी खण्ड है। बाप भी यहां आते हैं। पतिनीं को पावनबनाने भागीरथ में आते हैं। भागीरथ तो एक ही आदा हुआ है। यह है भागीरथी रो। बाप ही पूरा राज आकर समझाते हैं। दह रचता बाप ही रचना के आदि, मध्य, अंत को जानते हैं। यह है स्वर्ग का रचना। तो जस नके भी होता ना। इसलिए बाबा ने प्रश्न बनाई थी तुम सत्युग के द्रेष्ठाचारी हो या कलियुग के भ्रष्टाचारी हो? होके अपने से मूँथ। मनुष्य अपन को द्रेष्ठाचारी तो कह न सकेंगे। सत्युग तो अभी है नहीं। प्रश्न बाबा ने बहुत अच्छी निकाली थी। पता नहीं छपाई है या नहीं। कोई की बुधि में बैठा होंगा या नहीं। कोई की बुधि में आ जाता है तो द्वृष्ट काम कर लेते हैं। नहीं तो अपनी प्रत पर कुछ झक्कन कुछ बना देते हैं। गोल्डेन रज और आदरनरेज तो है ना। सत्युगी सतोप्रधान दुनिया में आदि सनातन देवी देवताएं ही रहते थे। और कोई थे भी नहीं। तुम बच्चों को ही बाप फिर से देवता बनाते हैं। देवताएं होते हैं सत्युग में। है भी वह भी मनुष्य परन्तु देवीगुण होने कारण वह पूजने लायक हैं। तमोप्रधान मनुष्य, सतोप्रधान देवताओं को पूजते हैं। तुम पवित्र प्रबृति मार्ग बाहे थे। इसलिए तुमको सम्पूर्ण निर्विकारी देवता कहा जाता था। क्यां तो सम्पूर्ण निर्विकारी नहीं कहेंगे। इसलिए त्वैं जो नम्बरबन मैं थैं उन्हों की ही महिमागाई जाती है। सत्युग आद में उन्हों का राज्य था। यह चैतन्य थे। अभी वह है नहीं। तुम बूच्चे बैठ समझाते हो। हमआप को राम-कृष्ण, अद्यता विष्णु के दो त्यल०ना० के ४४ जन्मों की कहानी सुनाते हैं। यह भी समझते हैं। तुम से ज्ञान ले रहे वही जो कल्प पहले

आये होंगे। तुम्हारे पास 'प्राप्ति' की बहुत है। जैसे आज शिवजयन्ति है तो तुम कहेंगे हम=शिव की बायो-
ग्रामी बताते हैं। वही मनुष्य सृष्टि का बीज स्थ है। हम यह सुनाएंगे कि कैसे वह सरी शाइ के आदि, भव्य
अन्त का राज समझते हैं। तुम पत्रे गिरावेंगे। दिदोरा पिट गर्वेंगे। अब्बाल्लु अखबार में डालेंगे। परन्तु इससे भी कोई
सम्बन्ध नहीं है। बूटोपिक तो बहुत है। चिनमयानन्द का रोज अखबार में पड़ता है आज। फलाने अध्याय पर
समझाएंगे। तुम भी कहेंगे आज फलाने एक पर समझाएंगे। हम उनके 84 जन्मों का कहानी बताते हैं। पूरे 84
जन्म क्रेष्ण कौन हैं यह तो भगवान बिगर कोई समझा न के। ज्ञान का सागर वह है। शिवजयन्ति भी मनायी
जाती है तो जरूर यहाँ आते हैं ना। सम्भव्यता तो ताकस मनुष्यों की ही होगी। जरूर वह आत्मा किस शरीर में
प्रदेश करते हैं। प्रकृति का आधार तैरें हैं। वस्त्र नया शरीर नहीं लेते हैं। खुद कहते हैं बहुत जन्मों की जरूर भैं
के भी अन्त में जब कि बानप्रस्त अवस्था होती है जब ही मैं प्रदेश करता हूँ। इन में बैठ तुम्हारौपृष्ठ के शान्ति
मध्य अन्त का राज समझता हूँ। तो अभी हमको उनकी श्रीमति भिल रही है। जो फिर हम आप को समझते हैं।
देर के ढेर समझेंगे। रुहानी स्कूल खुलते जाएंगे। रुहानी वापरों को ही समझते हैं। रुह सुनती है। इसलिए घड़ी 2
अपन को आत्मासमझना है। इसमें ही भेनत लगती है। बाप कहते हैं अपन को अहिंसा समझ भागें याद
करो। पतित-पादन में हूँ। श्रीकृष्णको तो पतित-पादन नहाँ कहेंगे। वह तो 84 जन्मपतित बनते हैं। बाप भी कहते
हैं बहुत जन्मोंके जरूर में मैं प्रवेशकरता हूँ। तो पतित हुआ ना। वही फिर पहले नम्बर मैं पादन बनना है।
मैं आता ही हूँ आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते। स्थापना को बातें तो बन्दरफल है। बाप
पहलै 2 अपनो पहचान देते हैं। यह समझानी और कोई दे न सके। इसमें टाईव लगता है ना। भक्ति-भाग वाले
कोई इतना जल्दी नहीं समझते हैं। अभी तुम भी फील करते होपहले तो कुछ भी समझ में नहीं आता था।
अभी कितनी पाईन्दत चलती रहती है। आई ० से ० ८ से ० जब पढ़ते हैं तो फील करते होइससे पहले बाती किताब
तोकोई काम के नहीं। उससे तो आमदानी नहीं होती। दिछली का जब यह पढ़ते हैं तब ही नौकरी भिलती है।
यहाँ पढ़ाई तो रुक ही है। बाप कहते हैं आज तुम्हारे मैं गुद्ध रमणिक बातें सुनाता हूँ। ज्ञान का सागर है ना।
और फिर हेकण्ड मैं जीवन गुरुत्व देता हूँ। बाप के बन जाते हैं फिर तो रमण स्वर्ग के भालिक ठहरे। यह भी
बाप समझते हैं दो बाप हैं। पारलैकिव बाप तो 2। जन्मों के लिए वर्सा देते हैं। यह कितनी जवरदस्त कमाई
है। रुक तो तुम लायक बनते हो। और एई-ऐसे के स्वर्जे मुझे तो तुम शाहुकार बनते हो। बहुत ऊँच पढ
पाते हो। शिव वाला से तुम सौंणा कर लेते हो। बाबा तो शराफ़ भी है ना। कोई तो झट कह देते हैं। बाबा
यह सब कुछ आप का है। अमानत अभी आप की है। और कोइ के पाए भी खाने से तो डर है क्योंकि सब
विनाश होने वाले हैं। मनुष्य तो व्याज पर जाकर खाते हैं। आगे तो 3-4 आना व्याज का निलतार्हा। अभी
दूँदौ रुद्धि भी लेते हैं। बाप समझते हैं अभी तो तुम कहाँ भीखेंगे तो खत्म हो जाएंगे। बैंक मैं खेंगे वह
मा तो खलासर हो जाएंगी ना। सरी यह दुनिया ही खलासर होनी है। दिक्षा किनकी दवीरहेंगी और धूर मैं...
बैंक आद कुछ भी न रहेंगे। ड स्टेट ही नहीं फिर स्टेट बैंक छब्बे काहे का। बाप समझते हैं यह सब विनाश
हो जाना है। अभी दवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। कोई २ मुंजते हैं कहाँ खें यह तो सब खत्म हो
जाएंगे। आप काम मैं लगा दो। बाप कहते अच्छा सदिय मैं लगाओ। धेराव डालो। सेन्टर्स खालते रहो तो तुम्हारे
कान आड़ेंगे। बाकी सब खत्म हो जाना है। यह है सच्ची कथाई। हाथ ऐसे भरतू और खाली होती है ना। तुम बच्चे
भरतू होंगे जाएंगे नम्बदार पुरुषार्थी अनुसार बाकीसरी दुनिया खाली हाथ जाएंगी। वह ईश्वर अर्थ दानआद करते
हैं इनडायेस्ट। और यह है डायेस्ट। उन से अल्प काल लिए भिलता है। यहाँ डायेस्ट करने से तुम्हारी 2। जन्मों
लिए भिलता है। कितना फर्क है। बाप तो कोई से भी लेता नहीं है। बाप कहते हैं मैं आया हाँ हूँ श्रीमत देने।

वाकी पै सा हम क्या करेंगे। मूलवतन मैं पैसा आद कहाँ ते आया। मैं हूँ ही मूलवतन का रहवासी। राकार सृष्टि मैं तुम आते हो। तुम ही जगा करते हो। जो फिर भविष्य 2। जन्म लिख पाते हो। तुम पूछते हो क्या करें। बाप कहेंग धेराव डालते जाओ। सेन्टर्स खोलो। कहते हैं सेन्टर तो खोलें, अब ब्राह्मणी चाहिस। ब्राह्मणी तो है नहीं। तेज्ज्वार क्षै ढोकर सर्विसरबुल निकलते ही नहीं हैं। बन्धन मैं पुंस पड़ते हैं। पढ़ कर फिर प्रदा न हीं सकते तो गिरेंगा क्या। प्रजा मैं चले जाएंगे। यहाँ तो तुम सत्यनारायण की कथा सुनाते हो। प्रजा की धोड़ ही सुनते हो। राजस्वनी पद पाना है तो सर्विस करनी पड़े। जीते जी भर कर बाप का बनना है। पहले जो मेरे पै उंहों से पूछो। उसी समय से छिट 2 चलती आ रही है। ख़्याल नहीं करते यह हो कर सकता। एक जवाहरी के पिछाड़ी इतने सब करे जा सकते। ऐसा जादू तो कब देखा नहीं। जस कुछ शक्ति है। वस सेसे ही कहते रहते। परन्तु कौन सी शक्ति है शक्ति क्या। चोज़ है, वह कुछ भी नहीं जानते। सर्व-शक्तिदान तो स्क बाप ही है। जिसकी राज भी कहते हैं। इस समय है रावण संघ। 5 विकारों की कितनी शक्ति है। रावण मुठा झरता ही नहीं है। बूत बना कर जलाते हैं फिर जाते हैं तंका लूटने। अच्छा स्क बार लूटा फिर क्यों जाते हो। बाप ने तो समझाया है यह सारी दुनिया ही लंका है। इस समय ही है ही रावण संघ। लोना आद कुछ भी हूँ नहीं तो लूटेंगे फिर वया। सत्युग मैं कितना सो ना जवाहर आद है। सब रावण ने लूटे ख़्लास कर दिया है। बाप तो पूछते हैं ना बताओ हम ने तुमको राजाई दो फिर क्य वह कहाँ स्त्री? वहसेने के भहल आद सब कहाँ गई। कितने हीरे जवाहरों के भहल थे। यह सोमनाथ का मंदिर किसने बनाया? तुम तो जानते हो ना। तुम कहेंगे इ नहो (ल०न १०) ने बनाया। अभी राजभाग हैते हैं फिर भस्ति-पार्ग मैं सोमनाथ का मंदिर आद बनावेंगे। यह तो विश्वय की बात है ना। जस्ते राजा हो दनावेंगे ना। नम्बरदन जो शाहुकार होंगा वही बनावेंगे। राजसं तो बहुत होंगे। एक को इसे देख दूसरा भी बनाते होंगे। इतना बड़ा लश्कर आया तो एक ही मंदिर ही धोड़ ही लूटा होगा। शहर मैं भी तो घूसे होंगे। एकलाख लश्कर एक मंदिर मैं धोड़ हो छ लगे होंगे। तो यह सब छर्चा करते 2 मंदिर बनाते 2, शास्त्र आद सुनाते 2 पैसा ही ख़्लास कर दिया है। गरीब बन पड़े हैं। व जब तक लोन न लेवे तब तक रोटी भी पहुँचा न सके। इतना अनाज़ आता है तो यह देते वया हैं। छटाकाक्या हाल है। यह खेल है छार और जीत का। फिर थोड़ी भी ऐसे हो चलेगा। द्रामा का चक्र ऐसा फिरता रहता है। यह तुम समझते हो। तुम भी पहले बैंधन बेसमध्य थे। बाप ने कितना बै समझदार शाहुकार बनाया है। अभी श्रीमति श्व को हप करते जाओ। उस पर चलो ना। बाप कहते हैं अपन क्षेत्र अःभा समझो। दूसरे को भाई की दृष्टि से देजो। पवित्र बनो। शरीर का भान न रहना चाहिए। अपन को अत्मा समझ मानें याद करो। दूसरे को ज्ञान भी आत्मा समझ कर दो। प्रैकटीस वरो। यह शिवजर्यान्ति भी तुम मनाते हो औरो को जगाने लिए। तुम तो जगे हुये हो। गीत आद भी तुमवे धीरे ही सुनना है। तुम तो सभी कुछ जानते हो ना। मनुष्य जर्यान्तियाँ मनाते हैं लूठी। तुम मनाते हो सब्दी। बोलो जब शिव गावा जाया ज्ञे=धोथा तो अनेक धर्म का विनाशः, एक धर्म की छ स्थापना की धी। राजयोग सिखाया धा। इस लिए वावा ने समझाया धा जहां-तहाँ तुम ल०ना० का चित्र खोखतुम ब्राह्मणों की यह रमआवजेस्ट है। ल०ना० के चित्र को ऐस कर कर धरा के अन्दर चाहे बाहर लया दो। जो कोई भी देखे तो पूछें। बोलो हन यह राज्य स्थापन कर रहे हैं। बाप कहते हैं पावन बनो। पतित-पावन कोई गंगा नहीं है। बाप को याद करो तो विकर्म विनश्च होंगे। बाप कहते हैं पावन बनो तो पावन दुनिया के मालिक बन जावेंगे। कोई भी छेरा देहधारी को याद न करो। यह लक्ष्मी-नारायण का चित्र देखकर सभी छुआ होंगे। पहले तो इनको आकर नमस्कार करेंगे। बोलो बाप को याद करो तो यह पद पावेंगे। भल ज्यन्ति हो व वान हो। यह चित्र तुम्हरालगा रहे। जो भी ब्राह्मण बच्चे हैं उंहों के पास यह चित्र जर लगी रहे। तो सब्दी यह तो देवताओं को भानने दाले हैं। पूछे तो सहो कि यह क्या है। बड़त कर के द्रामा के चित्र पर ही चिढ़ते हैं। तुम तो समझावेंगे प्रजापिता ब्रह्मी तो है ना।

इतने देर ब्रह्मा के बच्चे हैं। तुम भी हो। ब्रह्मा के बच्चे तो शिव बाबा के पोत्रे ठहरे। औरों को सम्झाने लिर तो रोज़ 2 समझाया जाता है। वह सब हैं जिसमानी स्कूल। यह है रहानी। इनके केन्द्र तो बहुत होनी चाहिए। सभी को लक्ष्य बताने लिर तुम खोलते हो। बाकी कोई धंधा आ द तो कर न सके। शिव बाबा के छाज़ाने में जग्या होता है। कोई अपनी आजीविका के लिर अपना ज्ञान बैठ सुनाते हैं यह भी एकचोरी, ठगी, शैतानी हुई। न उनका प्रयदा हो सकता है न देने वाले का। शिव बाबा ने अप्पलेस्ट भण्डर में जमा हुआ ही नहीं। शिव बाबा के अमानत खाने वाले महान पापहमा हो जाते हैं। ऐसे भी बहुत निकलेंगे जो दूठ 2 बता कर सेन्टर खोल बैठ जाँदेंगे। वह देते हैं शिव बाबा को। अगर बीच भैंसे मैं दूसरा खा गया तो एकदम रसातल चले जाँदेंगे। यह हुआ महापाप। यह भी इबामा मैं पार्ट है। बच्चियां सितम भी कितना सहन करती हैं। कई भों कर के बाप से वर्सा तो जख लेना है। पापहमा वहत मास्पेंड नंगन कर बाहर निकाल दते हैं। रिपोर्ट कर सकते हैं। परन्तु इसमें बड़ी साफ दिल चाहिए। डायर्बैस दे पिर जहां चाहे चले जाये। हिम्मत चाहिए ना। हनको तो कहे भी करके बाप से वर्सा लेना है। डायर्बैस देने विगर तो कोई को खा नहीं सकते हैं। बहुत खिट्टीपिट हो जाती है। कुमरियों को भी चिदठी विगर खा नहीं सकते हैं। जिनको तीर लग जाता है वह तो बहुदूरी से खोलते हैं। हम को विकार न देना है जाकर दूसरी शादी करे। गवर्मेन्ट कुछ भी कर न सके। आहर का कुछ भी शो आद करना यह तो दुनियाबी बातें हैं। अपना ज्ञान ही है गुप्त। एक तो पवित्र रहना है। और बाए को याद करना है। आप सशान भी बनपना है। सतोप्रथमन में बड़ी भेहनत है। यह तो बाप गैस्टी करते हैं सब को शान्तिधाम में ले जाऊंगा। परन्तु पिर नईदुनिया में ऊंच पद पाना इसके लिर पुरुषार्थ करना पड़े। जो अच्छीरीत पढ़ेंगे वह सुखधाम में आवेंगे। यह ते घेरन्टी है। बाकी है पढ़ाई पर। जितना पढ़ेंगे उतना ऊंच पद पावेंगे। वास्तव में तुम्हारी तो रोज जर्नल है। यह भी मनुष्यों को जगाने लिर एक्शन आद करते हैं। यहां तो बापहै ही। पिर तुम क्या जलसा बनावेंगे। तुम्हारों तो दाप से वर्सा लेने भेहनत करनी है। पवित्र बनना है। यहां की बात ही न्यारी है। बाप के बने वर्सा तो हो ही जाता है। पिर है श्रीमत पर चलना। जगना और जगना यह तुम्हारा धंधा है। सब को राज्ञा बताना है। यहां इन ओंखों से तुम जो देखते होउनका विनाश होना है? इन से क्या दिल लगानी है। इन से दिल हटती जाये टाईम लगता है। नये मकान बनाने में कव 6 ब्रह्मास कव 12-14 मास भीलग जाते हैं। पुराने मैं जो रहते हैं जानते हैं हम भैं= नये महल में जाँदेंगे। पुराने से दिल हटती जाँदेंगी। यह तो सब खत्म की जानी बाती है। मनुष्यों के साथ मकान आद भी खत्म हो जाएंगे। ज्ञात्माक शरीर छोड़ जाकर दूसरा शरीर लेंगी। हम तो खुशी से शरीर छोड़ते हैं। पवित्र बनते 2 शरीर छूट जाँदेगा। आहमा और शरीर तो पवित्र थे सो अभी अपवित्र है। तुम जानते हो हम ही यह थे। पिर यह राजाई पद पाना है। बाप श्रीमत तो बहुत अच्छे देते हैं। कहते हैं बात भत तो बहुत अच्छी है परन्तु बन्धन है। वह तो चुकतु करना है ना युक्ति है। विष तो पढ़ेंगे। अत्याचार होंगा। यह सब होंगे। जो कल्प डूँड़ा थौं सो पिर जख होंगा। हो रहा है कुछ नई बात नहीं है। कल्प 3 तुम राज्य लेते हो गयाते हो। तुम शिव शक्तिसेना इस समय बाप के बने हो। तुम्हारे मैं शक्ति है विकर्म विनाश करने की: प्राने की नहीं। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। विश्व के मालिक बनाने वाले को तुम भूलते क्यों हो। कितनी सहज पढ़ाई है।

वाप-दादा हस्ते भहावस्य:-

मीठे 2 रहानी पद-ना-पद-भाग्यशाली रहानी बच्चों प्रित रहानी वापदादा

कायाद प्यार याद सभाचार कि सभी सेन्टर्स के बच्चों दक्षोंके याद प्यार पत्र-सोगान शिव ज्यन्ति की औरालस्ट, पोतामेलआद पाई। सभी को याद-प्यार और पहुंच लिख रहे हैं। मुरली दिवारा भैरेसपाण्ड कर रहे हैं। बच्चों की नई निया अमरलोक लिरपदभान्पदभृ। जन्मलिर जमा हो रही है। ऐसे ही निश्चय जानना जी। यही सच्ची कुमाई। याद प्यार, विदाईलिस्ट और पोतामेल जिनकी न आई है तो मुरली कच्ची बन्द की जावेगी। अच्छा ग्रिम्पाई।

*** : *** : -आमशान्ति : -*** : : 5%